होनेवाली घटनाएं

फ्रेंकलीन के नोट्स

I. अंत के समय में रहना पृष्ठ 2

II. चुने हुओं का पलायन पृष्ठ 4

III. क्लेश का समय पृष्ठ 7

IV. पृथ्वी पर क्लेश लेकिन स्वर्ग में आनंद : पृष्ठ 9

1. मसीह का न्याय आसन पृष्ठ 9
2. मेमने का विवाह भोज पृष्ठ 10

V. मसीह का दूसरा आगमन पृष्ठ 10

1. स्वर्ग में जो विश्वासी होंगे, वे उसके साथ लौटेंगे पृष्ठ 11
2. पशु और झूठे भविष्यद्वक्ता को आग की झील में फेंक दिया जाएगा पृष्ठ 11
3. शैतान को एक हज़ार साल के लिए बांधा जाना पृष्ठ 11
4. विश्वासियों का मसीह के साथ राज्य पृष्ठ 12

VI. अंतिम न्याय – परमेश्वर के सिंहासन के सामने पृष्ठ 13

VII. नया आकाश और नई पृथ्वी पृष्ठ 14

होनेवाली घटनाएं

फ्रेंकलीन के नोट्स

इस्राएल का पवित्र और उसका सृष्टिकर्ता यहोवा यों कहता है: "मेरी सन्तान पर **घटित होनेवाली घटनाओं के विषय में मुझ से पूछो**, और मेरे हाथों के कार्यों को मुझ पर ही छोड़ दो। यशायाह 45:11

I. अंत के समय में रहना

रोमियों 13:11-14 समय का **ध्यान रखते हुए** ऐसा ही करो। अतः तुम्हारे लिए नींद से **जाग उठने** (वास्तविकता अर्थात आत्मिक वास्तविकता के लिए जाग उठने) की घड़ी आ पहुँची है, क्योंकि जिस समय हमने विश्वास किया था, उसकी अपेक्षा अब हमारा उद्धार (इस वर्तमान दुष्ट संसार से अंतिम छुटकारा) अधिक समीप है। (12) रात्रि प्रायः बीत चुकी है, **दिन** (प्रभु का दिन) **निकलने पर** है। अतः हम अन्धकार के कार्यों को **त्याग कर ज्योति के शास्त्र धारण करें।**
(13) हम **सीधी चाल चलें** जैसे दिन में, न कि रंगरेलियों, पियक्कड़पन, संभोग, कामुकता (वासना और व्यभिचार), झगड़े और ईर्ष्या में। (14) वरन् प्रभु यीशु मसीह को **धारण कर लो** और **शारीरिक वासनाओं की तृप्ति में मन न लगाओ।** - अपने शरीर की बुरी लालसाओं के बारे में, जो उसकी इच्छा और वासना को पूरी करता है, सोचना बंद करें।

हम आत्मिक युद्ध के समय में रह रहे हैं और हमें इस्साकारियों के समान होना चाहिए :

1 इतिहास 12:23 फिर लोग **लड़ने के लिये हथियार बाँधे हुए** हेब्रोन में दाऊद के पास इसलिये आए कि यहोवा वचन के अनुसार शाऊल का राज्य उसके हाथ में कर दें: उनके मुखियों की गिनती यह है। (32) इस्साकारियों में से **जो समय को पहचानते थे** कि इस्राएल को (परमेश्वर के लोगों को) क्या करना उचित है, उनके प्रधान दो सौ थे; और उनके सब भाई उनकी आज्ञा में रहते थे।

- सैनिक, अच्छी तरह प्रशिक्षित, अनुशासित, लक्ष्य की ओर केन्द्रित, जो स्वामियों की इच्छा जानते हैं, जो दुश्मन की चालों से परिचित हैं, पूरी तरह से यहाँ तक कि मृत्यु तक वचनबद्ध।

2 तिमुथियुस 3:1-5 परन्तु **ध्यान रख** कि अन्तिम दिनों में **कठिन समय** आएंगे। (2) क्योंकि मनुष्य स्वार्थी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निन्दक, माता-पिता की आज्ञा टालनेवाले, कृतघ्न, अपवित्र, (3) स्नेहरहित, क्षमारहित, परनिन्दक, असंयमी, क्रूर, भलाई से घृणा करने वाले, (4) विश्वासघाती, ढीठ, मिथ्याभिमानी, परमेश्वर से प्रेम करने की अपेक्षा सुख-विलास से प्रेम करने वाले होंगे। (5) यद्यपि ये भक्ति का वेश तो धारण करते हैं, फिर भी उसकी शक्ति को नहीं मानते: **ऐसे लोगों से दूर रहना**।

2 पतरस 3:3-4 पहले यह **जान लो** कि अन्तिम दिनों में **हँसी ठट्ठा करनेवाले** आएँगे जो अपनी ही अभिलाषाओं के अनुसार चलेंगे (4) और कहेंगे, **"उसके आने की प्रतिज्ञा कहाँ गई?** क्योंकि जब से बापदादे सो गए हैं, सब कुछ वैसा ही है जैसा सृष्टि के आरम्भ से था?"

मत्ती 24:4-14 इस पर यीशु ने उत्तर दिया, "सावधान रहो, कोई तुम्हें धोखा न दे, (5) क्योंकि बहुत लोग मेरे नाम से यह कहते आएंगे, 'मैं मसीह हूं' और बहुतों को धोखा देंगे। (6) तुम **लड़ाइयों की चर्चा और लड़ाइयों की अफ़वाह सुनोगे**। देखो, भयभीत न होना, क्योंकि इनका होना अवश्य है, परन्तु उस समय **अन्त न होगा**। (7) क्योंकि **जाति, जाति के विरुद्ध** और **राज्य, राज्य के विरुद्ध** उठ खड़े होंगे और बहुत से स्थानों पर **अकाल** पड़ेंगे और **भूकम्प** आएंगे। (8) परन्तु ये सब बातें तो पीड़ाओं का **आरम्भ** ही होंगी। (9) तब वे **क्लेश दिलाने के लिए तुम्हें पकड़वाएंगे** और **मार डालेंगे** और मेरे नाम के कारण समस्त जातियां तुमसे **घृणा करेंगी**। (यह बात इस्राएल और साथ ही साथ हिन्दू और मुसलिम देशों में रहनेवाले विश्वासियों के लिए सच हुई है और अब भी है) (10) उन दिनों में **बहुत-से लोग ठोकर खाएंगे** और **एक दूसरे से विश्वासघात** और **एक दूसरे से घृणा करेंगे**। (11) तब **बहुत-से झूठे नबी** उठ खड़े होंगे और बहुतों को भरमाएंगे। (12) अधर्म के बढ़ने के कारण बहुतों का **प्रेम ठंडा पड़ जाएगा**। (13) परन्तु जो अन्त तक **धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा**। (14) राज्य का यह सुसमाचार **सारे जगत में प्रचार किया जाएगा** कि **सब जातियों** पर **साक्षी** हो, और **तब अन्त आ जाएगा**।

मत्ती 24:33 **जब तुम इन सब बातों को होते देखो तो जान लेना कि वह निकट है, वरन् द्वार पर ही है।**

मत्ती 24:34 मैं तुम से सच कहता हूं कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो जाएं इस पीढ़ी का अन्त न होगा।

ऊपर दिए गए पद हमें आज के समय के बारे में बताते हैं।

हमें इस बात को पहचानना है और हमेशा याद रखें :

- जैसे यीशु इस संसार का नहीं था, हम भी इस संसार के नहीं हैं (यूहन्ना 17:16)

- हमारी **नागरिकता स्वर्ग की है**, जहां से हम उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के आगमन की प्रतीक्षा उत्सुकता से कर रहे हैं। (फिलिप्पियों 3:20)

- हम पृथ्वी पर **परदेशी** और **बाहरी** हैं। (इब्रानियों 11:13)

- हम पराए देश में रहनेवाले मसीह के राजदूत हैं। 2 कुरि. 5:20

- हमारा मिशन उस मिशन को पूरा करना है जिसके लिए यीशु इस जगत में आया था :

  खोए हुओं को **ढूँढने** और **बचाने** - मत्ती 24:14; 28:18-20
  नमक और ज्योति होने - मत्ती 5:13

समय के चिह्नों के द्वारा, ऐसा प्रतीत होता है कि हम अब "अंतिम दिनों" के द्वार पर खड़े हैं। इस समयकाल को क्लेश के रूप में जाना जाता है। परंतु, इससे पहले क्लेश का समय आरंभ हो, कुछ सुंदर होगा।

II. चुने हुओं का महा पलायन

2 थिस्सलुनीकियों 2:1-2 हे भाइयो, अब हम अपने **प्रभु यीशु मसीह के आने**, और **उसके पास अपने इकट्ठे होने के विषय** में तुम से विनती करते हैं (2) कि किसी आत्मा, या वचन, या पत्री के द्वारा, जो कि मानो हमारी ओर से हो, यह समझकर कि **प्रभु का दिन** आ पहुँचा है, तुम्हारा मन अचानक अस्थिर न हो जाए और न तुम घबराओ।

> वे बहुत कठिन समय में रह रहे थे, थिस्सलुनीकी के लोगों ने सोचा कि *"प्रभु का दिन"* आ चूका है और वे *"उसके पास इकट्ठा होने"* से चूक गए हैं।
>
> यह इस बात की ओर संकेत करता है कि पौलुस की शिक्षा यह थी कि *"प्रभु का दिन"* आने से पहले विश्वासी *"उसके साथ हवा में जा मिलेंगे"*। और उन्हें यह बताने के लिए कि *"प्रभु का दिन"* अभी नहीं आया है, पौलुस बताता है :

पद 3-4 किसी रीति से किसी के धोखे में न आना, क्योंकि वह दिन (प्रभु का दिन) न आएगा जब तक **धर्म का त्याग** (विश्वास से बहक जाना) न हो ले

> 1 तीमुथियुस 4:1-2 आत्मा स्पष्टता से कहता है कि आनेवाले समयों में कितने लोग भरमानेवाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से **बहक जाएँगे**। (देखें 1 यूहन्ना 2:17-19; 2 पतरस 2:20-22)

और वह **पाप का पुरुष** अर्थात् **विनाश का पुत्र** प्रगट न हो। जो विरोध करता है, (4) और हर एक से जो ईश्वर या पूज्य कहलाता है, अपने आप को बड़ा ठहराता है, यहाँ तक कि वह परमेश्वर के मन्दिर में बैठकर **अपने आप को ईश्वर ठहराता है**।

> यह सब नहीं हुआ था और यह स्पष्ट है कि इन सब बातों के होने से पहले, सच्चे विश्वासी *"उसके पास इकट्ठे"* हो जाएँगे।

"प्रभु का दिन" आने से पहले जब इस पृथ्वी पर महाक्लेश का समय होगा, उससे पहले प्रभु यीशु मसीह की कलीसिया अर्थात सारे विश्वासी संसार में से उठा लिए जाएंगे।

प्रभु का दिन : यशायाह 13:6+; यहेजकेल 30:3 ; योएल 1:15; 2:1, 11, 31, 3:14; आमोस 5:18-20; सपन्याह 1:14-18; मलाकी 4:5; प्रेरितों के काम 2:20; थिस्सलुनीकियों 5:2; 2 पतरस 3:10

मत्ती 24:37 जैसे **नूह** के दिन थे, वैसा ही **मनुष्य के पुत्र का आना** भी होगा। (38) क्योंकि जैसे जल-प्रलय से पहले के दिनों में, जिस दिन तक कि **नूह जहाज पर न चढ़ा** (न्याय से पहले), उस दिन तक लोग खाते-पीते थे, और उनमें विवाह होते थे। (39) और जब तक **जल-प्रलय आकर** उन सब को बहा न ले गया, तब तक उनको कुछ भी मालूम न पड़ा; **वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।** (40) उस समय दो जन खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। (41) दो स्त्रियाँ चक्की पीसती रहेंगी, एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी।

नूह के दिनों के समान हमें भी अपना जहाज़ बनाना चाहिए :
विश्वास ही से नूह ने उन बातों के विषय में जो उस समय दिखाई न पड़ती थीं, **चेतावनी पाकर** भक्ति के साथ **अपने घराने के बचाव** के लिये जहाज **बनाया**। इब्रानियों 11:7

नूह और उसके परिवार ने जहाज़ में प्रवेश किया और परमेश्वर ने उसका द्वार बंद कर दिया, और केवल वे ही परमेश्वर द्वारा सुरक्षित किए गए और उस क्लेश अर्थात न्याय से बचा लिए गए।

निश्चय ही उन्होंने उस न्याय को देखा, उसमें से गए और उसका अनुभव किया, लेकिन दूर से जिसे उन्होंने *अन्त तक सहा और उद्धार पाया*।

लूका भी नूह से सम्बन्धित यही बात लिखता है और फिर इन बातों को जोड़ देता है :

लूका 17:28-31 जैसा लूत के दिनों में हुआ था कि लोग खाते-पीते, लेन-देन करते, पेड़ लगाते और घर बनाते थे; (29) परन्तु **जिस दिन लूत सदोम से निकला**, उस दिन **आग और गन्धक आकाश से बरसी और सब को नष्ट कर दिया।** (30) **मनुष्य के पुत्र के प्रगट होने के दिन भी ऐसा ही होगा।**

स्मरण रखें – परमेश्वर ने कहा कि वह सदोम को नाश नहीं करेगा, यदि उसमें धर्मी जन होंगे (उत्पत्ति 18:26-33)। इसलिए इस अंतिम विनाश में से भी धर्मियों को निकाल लिया जाएगा।

उत्पत्ति 19:29 और ऐसा हुआ कि जब परमेश्वर ने उस तराई के नगरों को, जिनमें लूत रहता था, उलट-पुलट कर नष्ट किया, तब उसने अब्राहम को याद करके **लूत को** उस घटना से **बचा लिया** (यह सब होने से पहले)।

इससे पहले मिस्र में दंड और विपत्तियाँ आरंभ होती, परमेश्वर ने लाल समुद्र को अद्भुत रीति से दो भाग करके अपने चुने हुओं को निकाल लिया।

अतः हम इन पदों को समझ सकते हैं कि सब सच्चे विश्वासियों को "उठा लिए" जाएँगे, जिसे कुछ लोग "रैपचर" कहते हैं जो महा क्लेश से पहले होगा ("रैपचर" शब्द बाइबल में नहीं है। यह "हवा में जा मिलने" का लैटिन भाषा का शब्द है)।

1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18 क्योंकि **यदि हम विश्वास करते हैं** कि यीशु मरा और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, **उसी के साथ ले आएगा** (वे विश्वासी जो मर गए हैं और प्रभु के साथ केवल आत्मा में हैं)। (15) क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं कि हम जो जीवित हैं और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे, सोए हुओं (मरे हुओं) से कभी आगे न बढ़ेंगे। (16) क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी; और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे।(उनका शरीर जिलाया जाएगा और वे अपनी आत्मा से मिल जाएगा) (17) तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उनके साथ **बादलों पर उठा लिये** जाएँगे कि **हवा में प्रभु से मिलें**; और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। (18) इस प्रकार इन बातों से **एक दूसरे को शान्ति दिया करो**।

इस भाग में आगे है : अध्याय 5:1-11
पर हे भाइयो, इसका प्रयोजन नहीं कि **समयों और कालों के विषय में** तुम्हारे पास कुछ लिखा जाए। (2) क्योंकि तुम आप ठीक जानते हो कि जैसा रात को चोर आता है, वैसा ही **प्रभु का दिन** (महान अंतिम न्याय) आनेवाला है। (3) जब **लोग** कहते होंगे, "कुशल है, और कुछ भय नहीं," तो उन पर एकाएक **विनाश** आ पड़ेगा, जिस प्रकार गर्भवती पर पीड़ा; और **वे किसी रीति से न बचेंगे**। (4) पर **हे भाइयो, तुम तो अन्धकार में नहीं हो** कि वह दिन **तुम** पर चोर के समान आ पड़े। (5) क्योंकि **तुम** सब **ज्योति की सन्तान** और दिन की सन्तान हो; **हम न रात के हैं, न अन्धकार के हैं**। (6) इसलिये हम ... जागते और सावधान रहें ... (8) विश्वास और प्रेम की झिलम पहिनकर और उद्धार की आशा का टोप पहिनकर सावधान रहें। (9) क्योंकि **परमेश्वर ने हमें क्रोध के लिये नहीं**, (अंतिम न्याय क्रोध है। विश्वासी इसमें शामिल नहीं हैं) परन्तु इसलिये ठहराया है कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा **उद्धार प्राप्त करें**। (10) वह हमारे लिये इस कारण मरा कि हम चाहे जागते हों चाहे सोते हों, **सब मिलकर उसी के साथ जीएँ**। (11) इस कारण **एक दूसरे को शान्ति दो** और एक दूसरे की उन्नति का कारण बनो, जैसा कि तुम करते भी हो।

1 कुरिन्थियों 15:50-55 भी इस अलौकिक घटना का वर्णन करती है :
देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूँ : **हम** सब नहीं सोएँगे (सब मरेंगे नहीं), परन्तु **सब बदल जाएँगे**, (52) और **यह क्षण भर में, पलक मारते ही अन्तिम तुरही फूँकते ही होगा**। क्योंकि तुरही फूँकी जाएगी और मुर्दे

अविनाशी दशा में उठाए जाएँगे, (विश्वासियों की देह। उनकी आत्मा प्रभु के साथ होगी। 2 कुरि. 5:8) और **हम बदल जाएँगे।** (53) क्योंकि अवश्य है कि यह नाशवान देह अविनाश (पुनरुत्थित देह) को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले। (54) और जब यह नाशवान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है पूरा हो जाएगा: "जय ने मृत्यु को निगल लिया।

- इन पदों के द्वारा देह के पुनरुत्थान को समझने में सहायता मिलेगी :

1 कुरिन्थियों 15:42-45 मुर्दों का जी उठना भी ऐसा ही है। **शरीर** नाशवान दशा में बोया जाता है, और अविनाशी रूप में जी उठता है। (43) वह अनादर के साथ बोया जाता है, और तेज के साथ जी उठता है; निर्बलता के साथ बोया जाता है, और सामर्थ्य के साथ जी उठता है। (44) **स्वाभाविक देह** बोई जाती है, और **आत्मिक देह** जी उठती है : जबकि स्वाभाविक देह है, तो आत्मिक देह भी है।

तुरही की आवाज़ होते ही – हम क्षण भर में, पलक झपकते ही हम "हवा में प्रभु से मिलने के लिए बादलों पर उठा लिए जाएंगे"। इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।

III. क्लेश

मत्ती 24:15-28 सो जब तुम उस **उजाड़ने वाली घृणित वस्तु** को जिस की चर्चा दानिय्येल भविष्यद्वक्ता के द्वारा हुई थी, पवित्र स्थान में खड़ी हुई देखो, (जो पढ़े, वह समझे)। (16) तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएं। 17 जो छत पर हो, वह अपने घर में से सामान लेने को न उतरे। (18) और जो खेत में हों, वह अपना कपड़ा लेने को पीछे न लौटे। (19) उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उन के लिये हाय, हाय। (20) और प्रार्थना किया करो; कि तुम्हें जाड़े में या सब्त के दिन भागना न पड़े। (21) क्योंकि **उस समय ऐसा भारी क्लेश होगा, जैसा जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ, और न कभी होगा।** (22) और यदि वे दिन घटाए न जाते, तो कोई प्राणी न बचता; परन्तु चुने हुओं (जो क्लेश के दौरान विश्वास में आएँगे)
के कारण वे दिन घटाए जाएंगे। (23) उस समय यदि कोई तुम से कहे, कि देखो, मसीह यहां हैं! या वहां है तो प्रतीति न करना। (24) क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और **बड़े चिन्ह और अद्भुत काम दिखाएंगे**, कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें। (25) देखो, मैं ने पहिले से तुम से यह सब कुछ कह दिया है। (26) इसलिये यदि वे तुम से कहें, 'देखो, वह जंगल में है', तो बाहर न निकल जाना; या 'देखो, वह कोठरियों में है', तो विश्वास न करना। (27) क्योंकि जैसे **बिजली** पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती जाती है, **वैसा ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा।** (28) जहां लोथ हो, वहीं गिद्ध इकट्ठे होंगे॥

दूसरे शब्दों में – उसके आगमन को देखने से कोई चूक नहीं सकता

प्रकाशितवाक्य 13:2

जो **पशु** मैं ने देखा वह चीते के समान था ... (6) और उस ने **परमेश्वर की निन्दा** करने के लिये मुंह खोला, कि उसके नाम और उसके तम्बू अर्थात स्वर्ग के रहनेवालों की निन्दा करे। (7) और उसे यह अधिकार दिया गया, कि **पवित्र लोगों से लड़े, और उन पर जय पाए,** और उसे हर एक **कुल**, और **लोग**, और **भाषा**, और **जाति** पर **अधिकार दिया गया।** (8) और **पृथ्वी के वे सब रहने वाले** जिन के नाम उस मेमने की जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गए, जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है, **उस पशु की पूजा करेंगे।** (9) जिस के कान हों वह सुने ... (11) फिर मैं ने **एक और पशु** को पृथ्वी में से निकलते हुए देखा, उसके मेमने के से दो सींग थे; और वह अजगर के समान बोलता था। (12) और **यह उस पहिले पशु का सारा अधिकार उसके सामने काम में लाता** था, और पृथ्वी और उसके रहनेवालों से उस पहिले पशु की **जिस का प्राण घातक घाव अच्छा हो गया था, पूजा कराता था।** (13) और वह बड़े-बड़े चिन्ह दिखाता था, यहां तक कि मनुष्यों के सामने स्वर्ग से पृथ्वी पर आग बरसा देता था। (14) और उन चिन्हों के कारण जिन्हें उस पशु के सामने दिखाने का अधिकार उसे दिया गया था; वह पृथ्वी के रहनेवालों को इस प्रकार **भरमाता** था, कि पृथ्वी के रहनेवालों से कहता था, कि जिस पशु के तलवार लगी थी, वह जी गया है, उस की **मूरत बनाओ।** (15) और उसे उस पशु की मूरत में प्राण डालने का अधिकार दिया गया, कि **पशु की मूरत बोलने लगे**; और **जितने लोग उस पशु की मूरत की पूजा न करें, उन्हें मरवा डाले।** (16) और उस ने छोटे, बड़े, धनी, कंगाल, स्वतंत्र, दास **सब के दाहिने हाथ या उन के माथे पर एक-एक छाप लगवा दी।** (17) कि **उस को छोड़** जिस पर छाप अर्थात उस पशु का नाम, या उसके नाम का अंक हो, **और कोई लेन देन न कर सके।** (18) ज्ञान इसी में है, जिसे बुद्धि हो, वह इस पशु का अंक जोड़ ले, क्योंकि मनुष्य का अंक है, और उसका अंक **छः सौ छियासठ** है।

प्रकाशितवाक्य 14:9-13

जो कोई उस पशु और उसकी मूर्ति की पूजा करे, और अपने माथे या अपने हाथ पर उसकी छाप ले (10) वह परमेश्वर के प्रकोप की निरी मदिरा, जो उसके क्रोध के कटोरे में डाली गई है, पीएगा और पवित्र स्वर्गदूतों के सामने और मेमने के सामने आग और गन्धक की पीड़ा में पड़ेगा। (11) उनकी पीड़ा का धुआँ युगानुयुग उठता रहेगा, और जो उस पशु और उसकी मूर्ति की पूजा करते हैं, और जो उसके नाम की छाप लेते हैं, उनको रात दिन चैन न मिलेगा।" (12) पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु पर विश्वास रखते हैं।

IV. पृथ्वी पर क्लेश लेकिन स्वर्ग में आनंद

1. मसीह का न्याय आसन

रोमियों 14:10 हम सब के सब **परमेश्वर के न्याय सिंहासन** के सामने खड़ें होंगे। (12) इसलिये हम में से हर एक परमेश्वर को अपना अपना **लेखा देगा।**

स्वर्ग में प्रवेश पाने के लिए मसीह का न्याय आसन कोई समस्या नहीं है। पापों का दंड तो पहले ही क्रूस पर चुका दिया गया है (रोमियों 8:1-3)। परमेश्वर के सम्मुख केवल सच्चे विश्वासी ही खड़े होंगे। वहां उनका विषय, परमेश्वर के सेवकों के रूप में अपने कार्य का प्रतिफल पाना होगा।

2 कुरिन्थियों 5:10 क्योंकि अवश्य है कि हम **सब** का हाल मसीह के **न्याय आसन** के सामने खुल जाए, कि **हर एक** व्यक्ति अपने-अपने भले या बुरे कामों का **बदला** जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए।

1 कुरिन्थियों 3:13-15 **हर एक** का काम प्रगट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा, इसलिये कि **आग** के साथ प्रगट होगा और वह आग हर एक का **काम परखेगी** कि कैसा है। (14) जिसका काम उस पर बना हुआ **स्थिर रहेगा, वह मजदूरी पाएगा।** (15) यदि किसी का काम जल जाएगा, तो वह हानि उठाएगा**; पर वह आप बच जाएगा** परन्तु जलते-जलते।

प्रतिफल इन बातों के लिए दिए जाएँगे :

1. राज्य के लिए हमारे बोने और सींचने के परिश्रम के लिए (1 कुरि.3:8)
2. यीशु के नाम की खातिर सताव और अपमान को सहना (मत्ती 5:11-12)
3. दिखावे के लिए नहीं बल्कि वास्तव में धार्मिकता का जीवन जीना (मत्ती 6:1)
4. गरीबों को केवल दिखावे के लिए देना नहीं बल्कि वास्तव में देना (मत्ती 6:3-4)
5. गुप्त में प्रार्थना करना (मत्ती6:6)
6. गुप्त में उपवास करना (मत्ती 6:18)
7. उसके सेवकों को ग्रहण करना (मत्ती 10:41)
8. कुछ भी देना यहाँ तक कि पानी का एक गिलास भी (मत्ती10:42)
9. अपने शत्रुओं से प्रेम करना, भलाई करना, उधार देना (लूका 6:35)
10. सुसमाचार का प्रचार करना (1 कुरि. 9:16-18)
11. कुछ भी करना, मन से यह समझकर करना मानो प्रभु के लिए कर रहे हैं (कुलु.3:23-24)
12. मसीह के कारण निंदित होने को अधिक मूल्यवान समझना (इब्रा.11:26)

2 यूहन्ना 8 अपने विषय में चौकस रहो, कि **जो परिश्रम हम ने किया है उसको तुम गवाँ न दो**, वरन् **उसका पूरा प्रतिफल पाओ।**

प्रकाशितवाक्य 22:12 "देख, मैं **शीघ्र आनेवाला** हूँ; और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिये **प्रतिफल मेरे पास** है।

हम मुकुट भी पाएँगे :

1. परीक्षाओं को धीरज से सहकर और उससे प्रेम रखकर (याकूब 1:12)
2. सब बातों में आत्म-संयम रखकर (1Cor.9:25)
3. उनके लिए जिन्हें हमने जीता और जिन्हें शिष्य बनाया (1 थिस्सलुनीकियों 2:19)
4. विश्वासयोग्य रहने, अपनी दौड़ को पूरा करने, उससे प्रेम रखने के लिए (2 तिमु. 4:7-8)

2. मेमने का विवाह भोज

प्रकाशितवाक्य 19:7-10 आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उसकी स्तुति करें, क्योंकि **मेमने का विवाह** आ पहुँचा है, और उसकी दुल्हिन ने अपने आप को तैयार कर लिया है। (8) उसको शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहिनने का अधिकार दिया गया" -क्योंकि उस महीन मलमल अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम है। (9) तब स्वर्गदूत ने मुझ से कहा, "यह लिख, कि धन्य वे हैं, जो **मेमने के विवाह के भोज** में बुलाए गए हैं।" फिर उसने मुझ से कहा, "ये वचन परमेश्वर के सत्य वचन हैं।"

V. यीशु मसीह का दूसरा आगमन

मत्ती 24:29-31 "उन दिनों के **क्लेश के तुरन्त बाद** सूर्य अन्धियारा हो जाएगा, और चन्द्रमा का प्रकाश जाता रहेगा, और तारे आकाश से गिरे पड़ेंगे और आकाश की शक्तियाँ हिलाई जाएँगी। (30) तब मनुष्य के पुत्र का चिह्न आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे; और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे। (31) वह तुरही के बड़े शब्द के साथ अपने दूतों को भेजेगा, और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशाओं से उसके चुने हुओं को इकट्ठा करेंगे।

यहाँ चुने हुए लोग, इस्राएल और अन्य जाति के वे लोग हैं जो क्लेश के समय विश्वास में आए।

प्रकाशितवाक्य 19:11-21 फिर मैं ने स्वर्ग को खुला हुआ देखा, और देखता हूँ कि एक श्वेत घोड़ा है; और उस पर एक सवार है, जो विश्वासयोग्य और सत्य कहलाता है; और वह धर्म के साथ न्याय और युद्ध करता है। (12) उसकी आँखें आग की ज्वाला हैं, और उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं। उस पर एक नाम लिखा है, जिसे

उसको छोड़ और कोई नहीं जानता। (13) वह लहू छिड़का हुआ वस्त्र पहिने है, और उसका नाम परमेश्वर का वचन है।

उसके साथ, सब विश्वासी, उसकी कलीसिया, उसकी दुल्हन, लौटेंगे।

(14) स्वर्ग की सेना श्वेत घोड़ों पर सवार और श्वेत और शुद्ध मलमल पहिने हुए उसके पीछे पीछे है। (15) जाति जाति को मारने के लिये उसके मुँह से एक **चोखी तलवार** निकलती है। **वह लोहे का राजदण्ड** लिये हुए **उन पर राज्य करेगा**, और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुंड में दाख रौंदेगा। (16) उसके वस्त्र और जाँघ पर यह नाम लिखा है : "**राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु।**"

(19) फिर मैं ने उस **पशु**, और **पृथ्वी के राजाओं** और उनकी सेनाओं को उस घोड़े के सवार और **उसकी सेना से लड़ने** के लिये इकट्ठे देखा।"

पशु और झूठे भविष्यद्वक्ता का अंत

(20) **वह पशु**, और उसके साथ वह **झूठा भविष्यद्वक्ता पकड़ा गया** जिसने उसके सामने ऐसे चिह्न दिखाए थे जिनके द्वारा उसने उनको भरमाया जिन पर उस पशु की छाप थी और जो उसकी मूर्ति की पूजा करते **थे। ये दोनों जीते जी उस आग की झील में, जो गन्धक से जलती है, डाले गए।** (21) **शेष लोग** उस घोड़े के सवार की तलवार से, जो उसके मुँह से निकलती थी, **मार डाले गए**; और सब पक्षी उनके मांस से तृप्त हो गए।

शैतान को एक हज़ार साल के लिए बाँधना

(20:1) फिर मैं ने एक **स्वर्गदूत** को स्वर्ग से उतरते देखा, जिसके हाथ में **अथाह-कुंड की कुंजी** और एक **बड़ी जंजीर** थी। (2) उस ने उस अजगर, अर्थात् पुराने साँप को, जो **इब्लीस** और **शैतान** है, पकड़ के **हजार वर्ष के लिये बाँध दिया**, (3) और **उसे अथाह-कुंड में डालकर** बन्द कर दिया और उस पर मुहर लगा दी कि वह **हजार वर्ष के पूरे होने तक** जाति जाति के लोगों को फिर न भरमाए। इसके बाद अवश्य है कि वह थोड़ी देर के लिये फिर खोला जाए।

(4) फिर मैं ने **सिंहासन** देखे, और उन पर **लोग** बैठ गए (प्रका. 3:21), और उनको **न्याय करने का अधिकार दिया गया**। मैं ने उनकी आत्माओं को भी देखा, जिनके **सिर** यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण **काटे गए** थे, और जिन्होंने न उस पशु की, और **न उसकी मूर्ति की पूजा की** थी, और **न उसकी छाप अपने माथे और हाथों पर ली** थी। वे जीवित होकर (उनकी पुनरुत्थित देह जिलाई गई) **मसीह के साथ हजार वर्ष तक राज्य करते रहे।** (5) जब तक यह हज़ार वर्ष पूरे न हुए तब तक शेष मरे हुए न जी उठे। यह तो **पहला पुनरुत्थान है**। (6) धन्य और पवित्र वह है, जो इस पहले पुनरुत्थान का भागी है। ऐसों पर **दूसरी मृत्यु का कुछ भी अधिकार नहीं**, पर **वे** परमेश्वर और मसीह के **याजक** होंगे और उसके साथ हजार वर्ष तक **राज्य करेंगे।**

सब विश्वासी उसके साथ राज्य करेंगे

प्रकाशितवाक्य 5:9-10 तूने वध होकर अपने लहू से हर एक **कुल** और **भाषा** और **लोग** और **जाति** में से परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया है, और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक **राज्य** और **याजक** बनाया; और **वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं।**

न केवल हज़ार सालों के लिए बल्कि सदा के लिए

प्रकाशितवाक्य 22:5 फिर रात न होगी, और उन्हें दीपक और सूर्य के उजियाले की अवश्यकता न होगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा, **और वे युगानुयुग राज्य करेंगे।**

इस पृथ्वी पर हमारे सम्पूर्ण समय का उद्देश्य हमें भविष्य में प्रभु के साथ राज्य करने के पद के लिए तैयार करना है।

> हे मेरे भाइयो, जब तुम विभिन्न प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसको पूरे आनन्द की बात समझ
>
> याकूब 1:2

इस दृष्टांत को देखें जो यीशु ने सुनाया :

लूका 19:12-14 एक कुलीन पुरुष (यीशु मसीह) दूर देश को गया कि अपने लिए राज्य पाकर लौट आए (यीशु स्वर्ग को चला गया)। उसने अपने दासों (आपको और मुझे) में से दस को (सब को नहीं) बुलाकर उन्हें दस मुहरें दीं (वरदान और योग्यता) और उनसे कहा, 'मेरे लौट आने तक लेन-देन करना।' (15-19) "ऐसा हुआ कि जब वह राज्य पाकर लौटा तो उसने आज्ञा दी कि वे दास जिनको उसने धन दिया था बुलाए जाएं (रैपचर), जिस से उसे मालूम हो जाए कि उन्होंने कैसा व्यापार किया। तब पहले ने आकर कहा, 'हे स्वामी, तेरी मुहर से दस और मुहरें कमाई हैं।' उसने उससे कहा, '**धन्य**, हे उत्तम दास! **तू बहुत ही थोड़े में विश्वासयोग्य निकला अब दस नगरों पर अधिकार रख।**' दूसरे ने आकर कहा, 'हे स्वामी, तेरी मुहर से पाँच और मुहरें कमाई हैं।' उसने उससे भी कहा, '**तू भी पाँच नगरों पर हाकिम हो जा।**'

इस हज़ार वर्ष के राज्य को प्रभु के दिन के रूप में जाना जाता है।

> 2 पतरस 3:8 हे प्रियो, यह बात तुम से छिपी न रहे कि **प्रभु के यहाँ एक दिन हजार वर्ष के बराबर है,** और हजार वर्ष एक दिन के बराबर है।

VI. अंतिम न्याय – परमेश्वर के सिंहासन के सामने

2 पतरस 2:5 उसने धर्म के प्रचारक **नूह** समेत आठ व्यक्तियों **को बचा लिया**;
(7-8) और धर्मी **लूत को** जो अधर्मियों के अशुद्ध चालचलन से बहुत दुःखी था **छुटकारा दिया।** (8) क्योंकि वह धर्मी उनके बीच में रहते हुए और उनके अधर्म के कामों को देख देखकर और सुन सुनकर, हर दिन अपने सच्चे मन को पीड़ित करता था।
(9-10) तो प्रभु **भक्तों को** परीक्षा में से **निकाल लेना** और **अधर्मियों** को **न्याय के दिन** तक दण्ड की दशा में रखना भी जानता है, (10) विशेष करके उन्हें जो अशुद्ध अभिलाषाओं के पीछे शरीर के अनुसार चलते और प्रभुता को तुच्छ जानते हैं। वे ढीठ, और हठी हैं, और ऊँचे पदवालों को बुरा भला कहने से नहीं डरते,

2 पतरस 3:7 पर वर्तमान काल के आकाश और पृथ्वी उसी वचन के द्वारा इसलिये रखे गए हैं कि **जलाए जाएँ;** और ये भक्तिहीन मनुष्यों के **न्याय और नष्ट होने के दिन** तक ऐसे ही रखे रहेंगे। ... (10) परन्तु **प्रभु का दिन** चोर के समान आ जाएगा, उस दिन **आकाश** बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से **जाता रहेगा** और **तत्व** बहुत ही तप्त होकर **पिघल जाएँगे** और पृथ्वी और उस पर के काम **जल जाएँगे।** (11) जबकि ये सब वस्तुएँ इस रीति से पिघलनेवाली हैं,

तो तुम्हें पवित्र चाल-चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए,

(12) और **परमेश्वर के उस दिन** की बाट किस रीति से जोहना चाहिए और उसके जल्द आने के लिये कैसा यत्न करना चाहिए, जिसके कारण आकाश आग से पिघल जाएँगे, और आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएँगे। (13) पर उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार **हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिनमें धार्मिकता वास करेगी।** (14) इसलिये, हे प्रियो, जब कि तुम इन बातों की आस देखते हो, तो यत्न करो कि तुम शान्ति से उसके सामने निष्कलंक और निर्दोष ठहरो

प्रकाशितवाक्य 20:11 -21:6 फिर मैं ने एक **बड़ा श्वेत सिंहासन** और **उस को** जो उस पर बैठा हुआ है, देखा, जिस के सामने से पृथ्वी और आकाश भाग गए, और उन के लिये जगह न मिली। (12) फिर मैं ने छोटे बड़े सब **मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए** देखा, और **पुस्तकें खोली गईं**; और फिर एक और पुस्तक खोली गई; और फिर एक और पुस्तक खोली गई, अर्थात **जीवन की पुस्तक**; और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, उन के कामों के अनुसार **मरे हुओं का न्याय किया** गया। (13) और समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उस में थे दे दिया, और **मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुओं को जो उन में थे दे दिया**; और उन में से हर एक के कामों के अनुसार **उन का न्याय किया गया।** (14) और **मृत्यु और अधोलोक भी आग की झील में डाले गए**; यह आग की झील तो दूसरी मृत्यु है। (15) और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।

मत्ती इन बातों को इस प्रकार बताता है :

मत्ती 25:31-42 जब **मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा**, और सब स्वर्ग दूत उसके साथ आएंगे तो **वह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा।** (32) और **सब जातियां** (सभी जातीय समूह) **उसके सामने इकट्ठी की जाएंगी**; और जैसा चरवाहा **भेड़ों को बकरियों से** अलग कर देता है, वैसा ही **वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा।** (33) और वह **भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर** और बकरियों को बाई ओर खड़ी करेगा। (34) तब **राजा** अपनी **दाहिनी ओर वालों** से कहेगा, 'हे मेरे पिता के धन्य लोगों, **आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है।** (35) क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने मुझे खाने को दिया; मैं प्यासा था, और तुम ने मुझे पानी पिलाया, मैं परदेशी था, तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया। (36) मैं नंगा था, तुम ने मुझे कपड़े पहनाए; मैं बीमार था, तुम ने मेरी सुधि ली, मैं बन्दीगृह में था, तुम मुझ से मिलने आए। ... (40) तब **राजा** उन्हें उत्तर देगा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम ने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह **मेरे ही साथ किया।** (41) तब वह **बाईं ओर वालों** से कहेगा, 'हे शापित लोगो, मेरे सामने से उस **अनन्त आग में** चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है।

कृपया ध्यान दें : भेड़ों और बकरियों को अलग-अलग करना हमारा काम नहीं है।

1 कुरिन्थियों 15:24-28 **इस के बाद अन्त होगा**; उस समय वह **सारी प्रधानता** और **सारा अधिकार** और **सामर्थ्य का अन्त** करके राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा। (25) क्योंकि जब तक कि वह अपने बैरियों को अपने पांवों तले न ले आए, तब तक उसका राज्य करना अवश्य है। (26) सब से अंतिम बैरी जो नाश किया जाएगा वह **मृत्यु** है। (27) क्योंकि परमेश्वर ने सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया है, परन्तु जब वह कहता है कि **सब कुछ उसके आधीन कर दिया गया है** तो प्रत्यक्ष है, कि जिस ने सब कुछ उसके आधीन कर दिया, वह आप अलग रहा। (28) और जब सब कुछ उसके आधीन हो जाएगा, तो पुत्र आप भी उसके आधीन हो जाएगा जिस ने सब कुछ उसके आधीन कर दिया; ताकि **सब में परमेश्वर ही सब कुछ हो।**

VII. नया आकाश और नई पृथ्वी

प्रकाशितवाक्य 21 फिर मैं ने **नए आकाश और नई पृथ्वी** को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा। (2) फिर मैं ने **पवित्र नगर नए यरूशलेम** को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हिन के समान थी, जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो। (3) फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, "देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा; और उन का परमेश्वर होगा। (4) **और वह उन की आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा**; और इस के बाद **मृत्यु न रहेगी**, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं।"
(5) और जो सिंहासन पर बैठा था, उस ने कहा, "**देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं।**" फिर उस ने कहा, "लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं।" (6) फिर उस ने मुझ से कहा, "**ये बातें पूरी हो गई हैं, मैं अलफा और ओमिगा, आदि और अन्त हूं।**"